सूर्यदेवता : शुद्ध चिति की प्रभा

मैत्रेय लॅरिओस द्वारा लिखित व्याख्या

भारत के सबसे प्राचीन ग्रन्थों अर्थात् वेदों में सूर्यदेवता का महिमागान किया गया है। उनमें उन्हें मित्र, सवित्रृ, पूषण [पूषन], आदित्य और अन्य नामों से सम्बोधित किया गया है। इनमें से हरेक नाम उनकी दिव्यता के एक विशेष गुण का वर्णन करता है।

ऋग्वेद की प्राचीन ऋचाओं में सूर्यदेवता का वर्णन, समस्त प्राणियों के जीवनदाता और पालक के रूप में किया गया है। उनके गुणगान में उनका वर्णन है कि उनकी देह स्वर्णिम है और उनसे स्वर्णिम आभा प्रसरित होती है। अन्य वैदिक ऋचाओं में उन्हें प्रकृति के संरक्षक व पालक के रूप में दर्शाया गया है और उनकी उदार व कल्याणकारी प्रभा के कारण उन्हें अकसर 'मित्र' कहा जाता है।

सदियों से भारत के ब्राह्मण पुरोहित बिना चूके, दिन में तीन बार यानी सुबह, दोपहर और सन्ध्याकाल के समय भगवान सूर्य का आवाहन करते आए हैं—इस अनुष्ठान को 'सन्ध्यावन्दन' कहा जाता है। इस अनुष्ठान में वे गायत्री मन्त्र का पाठ करके 'सवितृ' अर्थात् 'जीवन व ऊर्जा के प्रदाता' के रूप में सूर्य भगवान की आराधना करते हैं ताकि वे समस्त दुःखों से मुक्त हो सकें और महासुख प्राप्त कर सकें। सूर्यदेव सर्वव्यापी प्रकाश प्रदान करते हैं, इसलिए उनका आवाहन करने से बाधाएँ दूर हो जाती हैं और वे ज्ञान, प्रज्ञान व मोक्ष का आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

शास्त्रों में बताया गया है कि सूर्यदेव अन्धकार को दूर करते हैं और इसी कारण उन्हें देखने की शक्ति, दृष्टि द्वारा प्राप्त होने वाले बोध और अन्ततः ज्ञान के साथ निश्चित तौर पर जोड़ा जाता है। सूर्यदेव को 'ज्ञान-चक्षु' कहा जाता है और गुरुतत्त्व के समान माना जाता है; वह तत्त्व जो हमारी दिव्यता के बोध को ढक देने वाले अज्ञान का नाश करता है। सूर्यदेवता का आवाहन करने से एक व्यक्ति श्रीगुरु के देदीप्यमान प्रकाश को आमन्त्रित करता है कि वह चिति का सूर्य बनकर उसके अन्दर जगमगाता रहे।

सिद्धयोग पथ पर हम सीखते हैं कि हम सूर्यदेवता की आराधना, विश्व में प्रकाश व ओज के स्रोत के रूप में करें और साथ ही अन्तर-प्रभा के साक्षात् रूप में भी जो कि हमारा सच्चा स्वरूप है। सूर्यदेवता का आवाहन करने का एक उपाय वह है जिसे ब्राह्मणवृन्द अपनाते हैं, 'सूर्यगायत्री मन्त्र' का पाठ करना जिसे 'सावित्री' या 'आदिगायत्री मन्त्र' या केवल 'गायत्री मन्त्र' भी कहा जाता है। हमें चाहिए कि हम इस शक्तिपूरित व पारम्परिक वैदिक मन्त्र को सुनते हुए या इसका पाठ करते हुए सूर्यदेवता का ध्यान करें।

शास्त्रों में कहा गया है कि सूर्यदेवता, अरुणोदय के समय उच्चारित गायत्री मन्त्र की भेंट को स्वीकार करते हैं। सूर्यदेवता के तेज में, अन्धकार का नाश करने की जो क्षमता है, इस मन्त्ररूपी भेंट से उस क्षमता में वृद्धि होती है। इस अन्धकार को शास्त्रों में असुरों के रूप में दर्शाया गया है जो हर रात सूर्यदेव को निगलने का प्रयास करते हैं। इस बढ़े हुए तेज के साथ सूर्यदेवता हर दिन भोर के प्रकाश के रूप में सहज ही प्रकट होते हैं। इसी प्रकार, सिद्धयोगी आध्यात्मिक अभ्यासों के साथ संलग्न होते हैं ताकि वे सीमितताओं के अन्धकार और अपने सच्चे स्वरूप के प्रति अज्ञान को दूर कर सकें और अपने अन्तर में दिव्य प्रकाश के पूर्ण उदय का आवाहन कर सकें।

शास्त्रों में ऐसा वर्णन है कि सूर्यदेवता अपने एक पहिये वाले रथ पर आसीन होकर आकाश में यात्रा करते हैं, इस पहिये के बारह अरे हैं और यह एक पहिया सूर्य के मार्ग को दर्शाता है। उनका रथ सात अश्वों द्वारा खींचा जाता है जो उन सात मुख्य छन्दों के द्योतक हैं जिनमें पवित्र वेदों की रचना की गई है। कहा जाता है कि सूर्यदेवता, देवी उषस् ['उषः' या 'उषा'] का अनुसरण करते हैं जिन्हें भोर की मूर्तरूप भी माना जाता है और जो अन्धकार व बुराई को दूर भगाती हैं। भोर के रूप में उषस् जागृति की और शुभारम्भों की शक्ति हैं। वे हमें कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं और उन्हें श्वास व समस्त प्राणियों के जीवन के साथ जोड़ा जाता है।

सूर्यदेवता को 'खग' अर्थात् 'वे जो आकाश में विचरण करते हैं,' भी कहा जाता है, और क्योंकि आकाश में विचरते हुए वे दिन और रात की रचना करते हैं, इसलिए ये अलौकिक देव समय, ऋतुओं व अन्य प्राकृतिक चक्रों के साथ भी सम्बन्धित हैं। जो सात अश्व सूर्यदेवता के रथ को खींचते हैं, वे सप्ताह के सात दिनों को तथा रथ के पहिये के बारह अरे वर्ष के बारह महीनों को दर्शाते हैं।

एक अन्य प्रतीकात्मक पहलू है कि सूर्यदेवता को दोनों हाथों में कमल का पुष्प धारण किए हुए दर्शाया जाता है। कमल प्रतीक है, प्रकृति और उसके चक्रों की रचनात्मक शक्ति का और इसलिए यह समय का प्रतीक है। सूर्यदेवता के रथ के पहिये [चक्र] की तरह ही कमल को अकसर बारह दल वाले कमल के रूप में दर्शाया जाता है; हरेक दल वर्ष के एक महीने का प्रतीक है। यद्यपि समय आगे बढ़ता जाता है, फिर भी जो प्रकाश उसे आगे बढ़ाता है, वह अपरिवर्तनशील बना रहता है। यही प्रकाश जो समय के परिवर्तन को संचालित करता है, हमें अन्तर से आलोकित करता है।

कमल की ही तरह, चक्र या रथ का पहिया धर्म यानी ब्रह्माण्ड के सर्वोच्च क्रम के स्वरूप को भी दर्शाता है, जो अपने मार्ग पर चलता हुआ हमेशा घूमता रहता है। परन्तु, पहिये की धुरी का केन्द्र बिल्कुल स्थिर बना रहता है जो कि उस स्थिरता को दर्शाता है जिसमें से सृष्टि की हर वस्तु का उद्भव होता है, वैसे ही जैसे किरणें सूर्य में से उद्भूत होती हैं।

ये कुछ तरीक़े हैं जिनसे हम सूर्यदेवता की कृपा का आवाहन कर सकते हैं : उदित होते सूर्य पर ध्यान करना; सूर्यनमस्कार के आसनों का अभ्यास करना; महाभारत जैसे भारतीय महाकाव्यों से सूर्यदेवता की कथाओं को पढ़ना; सूर्यदेवता के मन्त्र को गाना और उनकी अनेक स्तुतियों का पाठ करना जैसे सूर्यगायत्री मन्त्र, सूर्यस्तोत्रम्, सूर्याष्टकम् और आदित्यहृदयम्। सूर्यदेवता का आवाहन करने के ये अनेक तरीक़े साधकों को सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर मिल सकते हैं।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।